

प्रारंभिक परीक्षा

बिरसा मुंडा

संदर्भ

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और राज्यपाल संतोष गंगवार ने क्रांतिकारी आदिवासी नेता बिरसा मुंडा को उनकी 125वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

बिरसा मुंडा के बारे में -

- उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड के खूंटी जिले में छोटानागपुर पठार के मुंडा जनजाति में हुआ था।
- औपनिवेशिक शोषण के बीच पले-बढ़े, विशेष रूप से जमींदारी प्रथा के लागू होने के दौरान, जिसने पारंपरिक खूंटकट्टी भूमि प्रणाली की जगह ले ली, जिससे आदिवासी समुदायों को बेदखल कर दिया गया।
- आदिवासियों को उच्च लगान, जबरन मजदूरी और भूमि हानि का सामना करना पड़ा, जिससे कई लोग भूमिहीन मजदूर बन गए।



धार्मिक और सामाजिक सुधार -

- ईसाई धर्म अपनाने के बाद उन्होंने आरंभ में एक जर्मन मिशन स्कूल में शिक्षा प्राप्त की।
- यह एहसास होने के बाद कि वह स्कूल धार्मिक रूपांतरण का एक साधन है, उन्होंने स्कूल छोड़ दिया।
- स्वदेशी परंपराओं की ओर लौटने को प्रोत्साहित करते हुए 'बिरसाइट' नामक एक नए धर्म की स्थापना की।
- 'बिरसाइट' के नाम से जाने जाने वाले अनुयायियों ने ब्रिटिश शासन का विरोध किया और सामंती उत्पीड़न का विरोध किया।
- अपने आध्यात्मिक नेतृत्व और आदिवासी पहचान की वकालत के लिए 'धरती आबा' (पृथ्वी के पिता) की उपाधि अर्जित की।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका -

- मुंडा विद्रोह (1899-1900) का नेतृत्व किया, जिसे 'उलगुलान' (महान उथल-पुथल) के नाम से भी जाना जाता है।
- विद्रोह ब्रिटिश भूमि नीतियों और वन कानूनों के प्रति प्रतिक्रिया थी, जो पारंपरिक संसाधनों तक जनजातीय लोगों की पहुँच को प्रतिबंधित करते थे।
- 'मुंडा राज' या स्वशासन की स्थापना का आह्वान किया और ब्रिटिश सेना के खिलाफ गुरिल्ला हमले शुरू किए।
- नारे को बढ़ावा दिया: "अबुआ राज सेटर जना, महारानी राज टुंडू जना" ("रानी का शासन समाप्त हो और हमारा शासन शुरू हो")।

प्रभाव और विरासत -

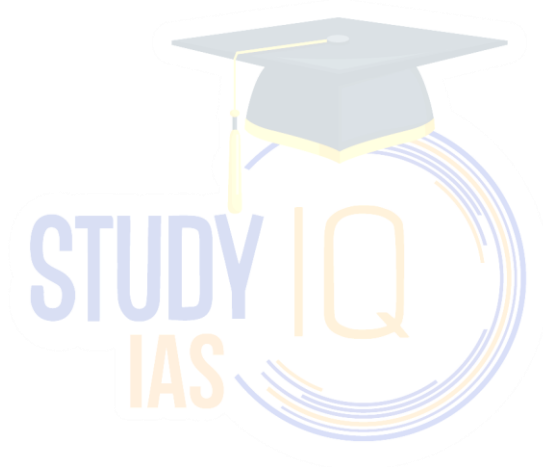
- इस विद्रोह ने 1908 के छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम को प्रभावित किया, जिसने जनजातीय भूमि को गैर-जनजातीय लोगों को हस्तांतरित करने पर प्रतिबंध लगा दिया तथा भूमि, जल और जंगलों पर जनजातीय अधिकारों को मान्यता दी।
- मार्च 1900 में ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किये गये और 9 जून 1900 को रांची जेल में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गयी।

- उनका विद्रोह अल्पकालिक था लेकिन उसने जनजातीय अधिकार आंदोलनों में एक स्थायी विरासत छोड़ी।

स्मरणोत्सव और मान्यता -

- 15 नवंबर को पूरे भारत में 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- इसी दिन झारखंड स्थापना दिवस भी मनाया जाता है, क्योंकि राज्य का गठन 2000 में बिरसा मुंडा की जयंती पर हुआ था।
- रांची में एक संग्रहालय उनके जीवन और विरासत को समर्पित है।
- **PM-JANMAN** (पीएम जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान) को प्रेरित किया, जिसका उद्देश्य आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाना और न्याय प्रदान करना है।

स्रोत: [TimesofIndia](https://timesofindia.indiatimes.com)



हींग(Asafoetida)

संदर्भ

CSIR-IHBT ने हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में हींग के प्रथम सफल पुष्पन एवं बीज स्थापना की सूचना दी है, जो भारतीय भूमि पर हींग के अनुकूलन एवं स्थानीयकरण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

हींग क्या है?

- **वानस्पतिक नाम:** फेरूला अस्सा-फोएटिडा, एक बारहमासी जड़ी बूटी।
- **सामान्य नाम:** भारत में हींग।
- **स्रोत:** पौधे की मूल जड़ के ओलियो-गम राल से प्राप्त।
- **उपयोग:** भारतीय व्यंजनों और आयुर्वेद में मसाले और औषधीय एजेंट के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- **प्राचीन उल्लेख:** चरक संहिता, महाभारत और पाणिनी के ग्रंथों में मिलता है।

खेती क्षेत्र -

- **मूल स्थान:** ईरान, अफ़गानिस्तान और मध्य एशिया के ठंडे शुष्क क्षेत्र।
- **आदर्श स्थितियाँ:**
 - रेतीली, अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी।
 - कम वर्षा (<300 मिमी)।
 - **तापमान सीमा:** -4°C से 40°C
- **संभावित भारतीय क्षेत्र:**
 - लाहौल-स्पीति, किन्नौर, उत्तरकाशी और इसी तरह की ऊँचाई वाली घाटियाँ।

हींग की मुख्य विशेषताएं -

- **लंबी परिपक्वता:** फूल आने और राल निष्कर्षण से पहले परिपक्व होने के लिए 5 वर्ष की आवश्यकता होती है।
- **राल(Resin) उपज:** इसकी जड़ों से निकाले गए सूखे गोंद का 40-64% हिस्सा ओलियोरेसिन होता है।
- **सूखा सहनशील:** कठोर सर्दियों और न्यूनतम पानी में जीवित रह सकता है; अत्यधिक ठंड में निष्क्रिय रहता है।
- **औषधीय उपयोग:** पाचन संबंधी समस्याओं, सूजन, पेट दर्द का इलाज करता है और चयापचय को उत्तेजित करने में मदद करता है।
- **सांस्कृतिक भूमिका:** अनुष्ठानों, खाना पकाने और पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग किया जाता है।

स्वदेशी खेती का महत्व -

- **आत्मनिर्भरता लक्ष्य:** भारत पहले 100% आयात पर निर्भर था, लेकिन अब घरेलू उत्पादन की ओर बढ़ रहा है।
- **अनुकूलन में सफलता:** पालमपुर, हिमाचल प्रदेश (1300 मीटर ऊँचाई) में सफल पुष्पन और बीज स्थापना, ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्रों से परे अनुकूलनशीलता दर्शाती है।
- **राष्ट्रीय महत्व:**
 - **हींग जर्मप्लाज्म संसाधन केंद्र 2022 में स्थापित किया गया।**
 - खेती के प्रयासों को बढ़ाने के लिए ऊतक संवर्धन प्रयोगशालाओं का विकास।

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

नाटो(NATO)

संदर्भ

नाटो ने 24-25 जून के नाटो शिखर सम्मेलन से पहले रूस से बढ़ते खतरों से निपटने के लिए रक्षा खर्च में 400% की वृद्धि का आग्रह किया है, जिसमें सैन्य खर्च के लिए सकल घरेलू उत्पाद का 3.5% और संबंधित बुनियादी ढांचे के लिए 1.5% प्रस्तावित है।

नाटो के बारे में -

पहलू	विवरण
स्थापना	1949 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में सोवियत विस्तार का मुकाबला करने के लिए उत्तरी अटलांटिक संधि (वाशिंगटन संधि) पर हस्ताक्षर किये गये।
मुख्यालय	ब्रुसेल्स, बेल्जियम
प्रकृति	यूरोप और उत्तरी अमेरिका के 32 देशों का सैन्य और राजनीतिक गठबंधन।
मूल सिद्धांत	सामूहिक रक्षा (अनुच्छेद 5): एक नाटो देश पर हमला सभी पर हमला माना जाता है। 9/11 हमलों (2001) के बाद केवल एक बार इसका इस्तेमाल किया गया।
संस्थापक सदस्य (12)	बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल, यूके, यूएसए।
नवीनतम विस्तार	फ़िनलैंड 2023 में नाटो में शामिल हो गया।
यूक्रेन की नाटो में भागीदारी की कोशिश	2022 में आवेदन किया गया, विनियस शिखर सम्मेलन (2023) में सुरक्षा आश्वासन प्राप्त हुआ।
गैर-नाटो यूरोपीय संघ सदस्य	ऑस्ट्रिया, साइप्रस, आयरलैंड और माल्टा।

- नाटो संधि के अनुच्छेद 5 में कहा गया है कि एक सदस्य पर हमला सभी सदस्यों पर हमला माना जाएगा, जिससे पारस्परिक रक्षा सुनिश्चित होगी।
- भारत नाटो का सदस्य नहीं है, लेकिन कूटनीतिक माध्यमों से सामरिक और सुरक्षा मुद्दों पर नाटो के साथ संपर्क रखता है।

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

स्थायी चुंबक(Permanent Magnet)

संदर्भ

चीन के निर्यात प्रतिबंधों के बीच भारत के दुर्लभ मृदा चुंबक(rare earth magnet) आयात में वृद्धि हुई, जिससे ईवी और ऑटो क्षेत्रों के लिए चिंता बढ़ गई, आपूर्ति संबंधी चिंताएं उत्पन्न हुई, कूटनीतिक कार्रवाई की गई और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला।

स्थायी चुंबक क्या है?

- स्थायी चुंबक किसी भी बाह्य शक्ति स्रोत के बिना चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करते हैं।
- एक बार चुंबकित होने के बाद, वे लम्बे समय तक अपनी चुंबकीय शक्ति बरकरार रखते हैं।
- आमतौर पर इसे लोहा, निकल, कोबाल्ट जैसी धातुओं या नियोडिमियम और समैरियम जैसे दुर्लभ मृदा तत्वों से बनाया जाता है।

दुर्लभ मृदा स्थायी चुंबक क्या हैं?

- ये दुर्लभ मृदा तत्वों (कुल 17 तत्व) का उपयोग करके बनाए गए स्थायी चुंबक हैं।
- प्रमुख दुर्लभ मृदा तत्वों में नियोडिमियम, समैरियम और डिस्प्रोसियम शामिल हैं।
- इनमें असाधारण रूप से मजबूत चुंबकीय गुण होते हैं।

तथ्य: दुर्लभ मृदा स्थायी चुंबकों के उत्पादन हेतु भारत की पहली सुविधा विशाखापत्तनम में है।

साधारण चुंबकों की तुलना में लाभ -

- दुर्लभ मृदा चुंबक, साधारण लौह चुंबकों की तुलना में अधिक शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करते हैं।
- कॉम्पैक्ट, हल्के और उच्च प्रदर्शन मोटर्स को सक्षम करते हैं।
- इन्हें उच्च चुंबकीय क्षेत्र शक्ति और बड़े टॉर्क आउटपुट के लिए जाना जाता है।
- इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल और सैन्य उपकरणों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- हाइपरसोनिक हथियारों और निर्देशित ऊर्जा प्रणालियों जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों के लिए महत्वपूर्ण।
- भारत में बढ़ते ई-कचरे से निपटने में सहायता करता है।

भारतीय संयंत्र में प्रयुक्त प्रौद्योगिकी -

- स्वदेशी न्यूनीकरण-प्रसार प्रौद्योगिकी पर आधारित।
- उत्पादन:
 - समैरियम-कोबाल्ट (SmCo) चुंबक
 - नियोडिमियम-आयरन-बोरॉन (NdFeB) चुंबक

भारत के लिए महत्व -

- दुर्लभ मृदा धातुओं के लिए विदेशी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता कम हो जाती है।
- मेक इन इंडिया पहल को मजबूती प्रदान करता है।
- प्रमुख क्षेत्रों में मांग को समर्थन देता है: इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा और एयरोस्पेस।

ई-कचरा संग्रहण एवं पुनर्चक्रण से संबंधित चिंताएँ -

- कमजोर संस्थागत एवं प्रबंधन प्रणालियाँ।
- वर्तमान में केवल 22% ई-कचरा ही एकत्रित किया जाता है।
- पुनर्चक्रण मुख्य रूप से सोना और चांदी निकालने पर केंद्रित है, न कि दुर्लभ मृदा तत्वों पर।

स्रोत: [IndianExpress](https://www.indianexpress.com)

अपर सियांग परियोजना

संदर्भ

विस्थापन को लेकर विरोध प्रदर्शनों के कारण भारत की 11.2 गीगावाट की अपर सियांग परियोजना में देरी हो गई है, जिससे NHPC को चीन सीमा के निकट इसके सामरिक महत्व के कारण स्थल चयन में तेजी लानी पड़ रही है।

अपर सियांग परियोजना के बारे में -

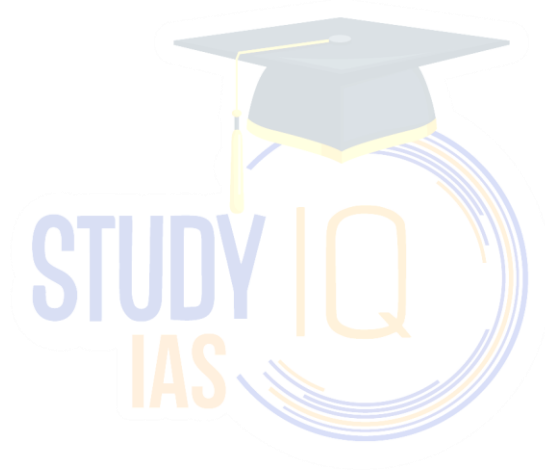


- यह एक बहुउद्देशीय जलविद्युत परियोजना है जिसका उद्देश्य बाढ़ को कम करना, सियांग नदी के प्राकृतिक प्रवाह को बनाए रखना तथा 11,000 मेगावाट क्षमता की बिजली उत्पादन करना है।
- यह अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सियांग जिले में सियांग नदी (ब्रह्मपुत्र) के पास स्थित है।
- **जलाशय क्षमता:** 9 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम).
- **स्थापित क्षमता:** 11,000 मेगावाट.
- **NHPC(राष्ट्रीय जलविद्युत ऊर्जा निगम)** और **NEEPCO(उत्तर पूर्वी विद्युत ऊर्जा निगम लिमिटेड)** द्वारा संयुक्त रूप से विकसित।
- इसे चीन द्वारा नदी के ऊपरी हिस्से में छोड़े गए पानी से आने वाली बाढ़ को कम करने तथा कम वर्षा वाले मौसम में नदी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए इसे डिजाइन किया गया है।
- हालांकि, इस परियोजना ने ऊपरी सियांग और सियांग जिलों में स्थानीय आदि जनजाति के बीच चिंता पैदा कर दी है, जिन्हें विस्थापन और कृषि भूमि तथा घरों के नुकसान का डर है।

सियांग नदी के बारे में -

- **उद्गम:** चेमा युंगडुंग ग्लेशियर, तिब्बत
- तिब्बत में **त्सांगपो** के नाम से जाना जाता है
- तिब्बत में त्सांगपो के किनारे स्थित प्रमुख शहर: ल्हासा, शिगात्से
- अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सियांग जिले में तुतिंग के पास भारत में प्रवेश करती है
- भारत में सियांग नदी के नाम से जानी जाती है
- अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी सियांग जिले से होकर बहती है
- सियांग नदी के किनारे स्थित प्रमुख शहर: पासीघाट
- असम पहुंचने से पहले भारत में लगभग 52 किलोमीटर की यात्रा करती है
- असम में **लोहित और दिबांग नदियों** को जोड़ती है
- संयुक्त नदियाँ **ब्रह्मपुत्र नदी** बनाती हैं

- ब्रह्मपुत्र नदी असम और बांग्लादेश से होकर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है
स्रोत: [IndianExpress](https://www.indianexpress.com)



निकल(Nickel)

संदर्भ

नेचर में प्रकाशित अध्ययन में निकल निकालने की पारंपरिक बहु-चरणीय प्रक्रिया को दरकिनार कर दिया गया तथा एक ही भट्टी में संचालित एकल धातुकर्म चरण विकसित किया गया।

समाचार के बारे में और अधिक जानकारी -

- पारंपरिक प्रक्रिया में निस्तापन, प्रगलन, अपचयन और शोधन शामिल हैं।
 - पारंपरिक प्रक्रिया से केवल एक टन निकल उत्पादन से 20 टन से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन होता है।
- यह नई विधि पारंपरिक बहु-चरणीय निकल निष्कर्षण की तुलना में काफी अधिक ऊर्जा-कुशल (18% तक) है तथा प्रत्यक्ष कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन (84% तक) को काफी कम करती है।

निकल के उपयोग -

- पौधों, जानवरों और कवकों को एन्जाइम यूरेएज के कार्य के लिए निकल की आवश्यकता होती है।
 - उदाहरण के लिए कवक क्रिटोकोकस नियोफार्मन्स फैलने और उपनिवेश बनाने के लिए यूरेयाज़ का उपयोग करता है
- इसका उपयोग सौंदर्य प्रसाधनों, पेंटों और कुछ प्लास्टिकों में रंग के रूप में किया जाता है।
- इसका उपयोग इलेक्ट्रोप्लेटिंग में किया जाता है, जिसमें बेहतर उपस्थिति और स्थायित्व के लिए अन्य धातुओं पर निकल की एक पतली परत चढ़ाई जाती है।
- यह निकल-मेटल हाइड्राइड और रिचार्जबल निकल-कैडमियम जैसी बैटरियों में पाया जाता है, जिनका उपयोग लैपटॉप और बिजली उपकरणों जैसे उपकरणों में किया जाता है।

निकल से होने वाली बीमारियाँ -

- निकल **कैंसरकारी** है। यह फेफड़ों की फाइब्रोसिस, गुर्दे और हृदय संबंधी बीमारियों और श्वसन तंत्र के कैंसर का कारण बन सकता है।

भारत में निकल अयस्क वितरण -

- ओडिशा के जाजपुर जिले में सुकिंदा घाटी में लिमोनाइट के रूप में निकल के महत्वपूर्ण भंडार हैं।
- झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले में तांबे के साथ निकल भी सल्फाइड के रूप में पाया जाता है।
- इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया में दुनिया के सबसे बड़े निकल भंडार हैं।

स्रोत: [The Hindu](#)

समाचार में स्थान

क्रोएशिया



खबर? प्रधानमंत्री मोदी G-7 शिखर सम्मेलन के लिए कनाडा की अपनी यात्रा के दौरान साइप्रस और क्रोएशिया का दौरा करेंगे।

इसके बारे में -

- **अवस्थिति:** दक्षिण-पूर्वी यूरोप, एड्रियाटिक सागर पर।
- **राजधानी:** ज़ाग्रेब
- **सीमाएँ:** स्लोवेनिया, हंगरी, सर्बिया, बोस्निया और हर्जगोविना, और मोन्टेनेग्रो।
- **मुद्रा:** यूरो (2023 में यूरोजोन में शामिल हो गया)।
- **सदस्यताएँ:**
 - यूरोपीय संघ (EU): 2013 में शामिल हुआ।
 - नाटो: 2009 से सदस्य
 - शेगेन क्षेत्र: 2023 में शामिल हुआ।
- **भूगोल:** अपने दीनारिक आल्प्स, 1,000 से अधिक द्वीपों और डालमेशियन तट के लिए जाना जाता है।
- **अर्थव्यवस्था:** पर्यटन-संचालित; डबरोवनिक् (यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल) जैसे शहरों के लिए प्रसिद्ध।
- **ऐतिहासिक नोट:** पूर्व यूगोस्लाविया का हिस्सा; 1991 में स्वतंत्रता प्राप्त हुई।
- **भारत-क्रोएशिया संबंध:** मैत्रीपूर्ण राजनयिक संबंध, व्यापार, संस्कृति और शिक्षा में सहयोग।

स्रोत: [TheHindu](#)

संपादकीय सारांश

जनगणना और लोगों का पुनर्निर्माण

संदर्भ

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने घोषणा की है कि अगली जनगणना दो चरणों में आयोजित की जाएगी और जनगणना के लिए संदर्भ तिथि 1 मार्च, 2027 होगी।

जनगणना का महत्व -

- **राजनीतिक प्रतिनिधित्व:** परिसीमन के माध्यम से संसद और राज्य विधानसभाओं में सीटों के पुनर्वितरण का निर्धारण करता है, जिससे निष्पक्ष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है।
- **संसाधन आवंटन:** वित्त आयोग की सिफारिशों के मार्गदर्शन में जनसंख्या गतिशीलता और विकास आवश्यकताओं के आधार पर केंद्र और राज्यों के बीच राजस्व बंटवारे को प्रभावित करता है।
- **नीति निर्माण:** स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, रोजगार, प्रवासन और सामाजिक कल्याण योजनाओं में प्रभावी नीतियां तैयार करने के लिए आवश्यक सटीक जनसांख्यिकीय डेटा प्रदान करता है।
- **सामाजिक न्याय और समावेशन:** सटीक गणना के माध्यम से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और संभवतः अन्य पिछड़े वर्गों के लिए सकारात्मक कार्यों और आरक्षण नीतियों को सुगम बनाता है।
- **अवसंरचना विकास:** शहरी-ग्रामीण गतिशीलता और प्रवास प्रवृत्तियों का मानचित्रण करके शहरी नियोजन, ग्रामीण विकास, अवसंरचना विस्तार और कुशल सेवा वितरण का मार्गदर्शन करता है।
- **राष्ट्रीय एकीकरण:** राजनीतिक समुदाय की धारणा को प्रभावित करके और साझा शासन और संसाधन आवंटन को सुदृढ़ करके राष्ट्रीय पहचान और एकता को आकार देता है।

जनगणना में देरी के कारण लंबित प्रक्रियाएँ -

- **परिसीमन कार्य:** अद्यतन जनसंख्या आंकड़ों की कमी के कारण संसदीय और विधानसभा सीटों के पुनर्वितरण में देरी हुई।
- **वित्त आयोग की सिफारिशें:** राजस्व-बंटवारे के लिए सोलहवें वित्त आयोग का फार्मूला विलंबित है या पुराने आंकड़ों पर आधारित है, जिससे संसाधनों का समतापूर्ण वितरण जटिल हो रहा है।
- **जाति जनगणना:** व्यापक जातिगत आंकड़े एकत्र करने में देरी, आरक्षण नीतियों और सामाजिक समानता उपायों को प्रभावित करना।
- **लिंग कोटा कार्यान्वयन:** लंबित परिसीमन से विधानमंडलों में एक-तिहाई महिला आरक्षण के प्रभावी कार्यान्वयन पर प्रभाव पड़ता है।
- **प्रवासन और शहरीकरण में नीति समायोजन:** अद्यतन आंकड़ों के अभाव से शहरी विकास, प्रवासन, आवास और रोजगार नीतियों के प्रबंधन में लक्षित हस्तक्षेप में देरी होती है।

जनगणना और परिसीमन से उत्पन्न प्रमुख मुद्दे -

- **क्षेत्रीय असमानताएं:** केवल जनसंख्या के आधार पर सीटों का पुनर्वितरण, राजनीतिक प्रभाव को आर्थिक रूप से विकसित, कम प्रजनन क्षमता वाले दक्षिणी/पश्चिमी राज्यों से अधिक जनसंख्या वाले उत्तरी/मध्य राज्यों की ओर स्थानांतरित कर सकता है।
- **जाति गणना विवाद:** सभी जातियों की अलग-अलग गणना करने से सामाजिक तनाव, राजनीतिक लामबंदी और 50% की सीमा से अधिक कोटा बढ़ाने की मांग शुरू हो सकती है।
- **आर्थिक और जनसांख्यिकीय विचलन:** जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास के बीच असमानता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व को आर्थिक रूप से प्रगतिशील राज्यों से दूर कर सकती है।
- **जनसांख्यिकीय डेटा का राजनीतिकरण:** डेटा संग्रहण और वर्गीकरण प्रक्रियाओं का राजनीतिक रूप से शोषण किया जा सकता है, जिससे पहचान की राजनीति और क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता बढ़ सकती है।

- **तकनीकी कार्यान्वयन जोखिम:** पहली डिजिटल जनगणना में डेटा गोपनीयता, सटीकता, साइबर सुरक्षा खतरों और तार्किक चुनौतियों से संबंधित जोखिम शामिल हैं।

आगे की राह -

- **परिसीमन के लिए संतुलित मानदंड:** राजनीतिक प्रतिनिधित्व को निष्पक्ष रूप से संतुलित करने के लिए जनसंख्या के आकार के साथ-साथ आर्थिक मापदंडों, विकासात्मक सूचकांकों और जनसांख्यिकीय कारकों को शामिल करना।
- **पारदर्शी और समावेशी दृष्टिकोण:** जाति जनगणना कार्यान्वयन में पारदर्शिता और आम सहमति सुनिश्चित करना, सामाजिक निहितार्थों का संवेदनशीलता से प्रबंधन करना।
- **उन्नत संघीय संवाद:** केंद्र और राज्यों के बीच सक्रिय परामर्श को सुविधाजनक बनाना, राजस्व-साझाकरण और प्रतिनिधित्व पर शिकायतों का सक्रियतापूर्वक समाधान करना।
- **मजबूत डिजिटल अवसंरचना:** साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण ढांचे को मजबूत करना, तथा डिजिटल डेटा संग्रह प्रक्रियाओं में सटीकता और दक्षता सुनिश्चित करना।
- **समग्र नीति हस्तक्षेप:** सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, प्रवासन पैटर्न, शहरी दबावों और समावेशी विकास रणनीतियों को सक्रिय रूप से संबोधित करने के लिए जनगणना डेटा का उपयोग करना।
- **रणनीतिक राजनीतिक संचार:** बदलती जनसांख्यिकी के बीच ध्रुवीकरण को कम करने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए जनगणना संचार में राजनीतिक तटस्थता और स्पष्टता बनाए रखना।

स्रोत: [The Hindu: The Census and the remaking of a people](#)



खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाना

संदर्भ

- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2026 को अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किया है।
- यह प्रस्ताव वैश्विक कृषि में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका का जश्र मनाता है, साथ ही उनकी चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है, जिसमें संपत्ति अधिकार और बाजार तक पहुंच शामिल है।

कृषि में महिलाओं का महत्व -

- **खाद्य उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान:** विकासशील देशों में खाद्य उत्पादन में महिलाओं की हिस्सेदारी 60% से 80% तथा दक्षिण एशिया में कृषि श्रम में उनकी हिस्सेदारी लगभग 39% है।
- **घरेलू खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका:** महिला किसान स्थानीय और निर्वाह कृषि के माध्यम से परिवार के पोषण, खाद्य उपलब्धता और सामुदायिक खाद्य सुरक्षा में सीधे योगदान देती हैं।
- **ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान:** महिलाओं की भागीदारी स्थिर कृषि उत्पादन सुनिश्चित करके स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है, तथा ग्रामीण आर्थिक लचीलेपन में महत्वपूर्ण योगदान देती है।
- **जैव विविधता और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षक:** अक्सर पारंपरिक कृषि पद्धतियों को बनाए रखते हैं, स्वदेशी बीजों, जैव विविधता को संरक्षित करते हैं, और जलवायु-अनुकूल कृषि तकनीकों को बढ़ावा देते हैं।
- **जलवायु अनुकूलन में महत्वपूर्ण भूमिका:** महिलाएं पर्यावरणीय परिवर्तनों के अनुरूप कृषि पद्धतियों को सक्रिय रूप से अनुकूलित करती हैं, जिससे सामुदायिक स्तर पर लचीलेपन में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

महिला किसानों के समक्ष चुनौतियाँ -

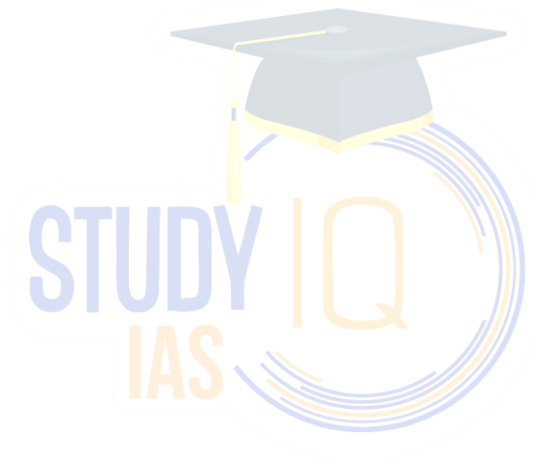
- **भूमि स्वामित्व और संपत्ति अधिकार:** भारत में महिलाएं केवल 8.3% भूस्वामियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिससे संसाधनों पर उनका नियंत्रण और ऋण एवं संस्थागत सहायता प्राप्त करने की उनकी क्षमता काफी सीमित हो जाती है।
- **वित्त तक सीमित पहुंच:** संपार्श्विक संपत्ति की कमी के कारण, महिला किसानों को पर्याप्त ऋण प्राप्त करने में संघर्ष करना पड़ता है, जिससे कृषि प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे में निवेश करने की उनकी क्षमता बाधित होती है।
- **प्रौद्योगिकी और सूचना तक सीमित पहुंच:** मोबाइल फोन, इंटरनेट और कृषि संबंधी परामर्शों तक कम पहुंच के कारण महिलाओं की उन्नत कृषि पद्धतियों और जलवायु अनुकूल तकनीकों को अपनाने की क्षमता बाधित होती है।
- **जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि:** जलवायु परिवर्तन महिला किसानों को असमान रूप से प्रभावित करता है, उनकी घरेलू और कृषि संबंधी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, तथा कृषि और आजीविका संबंधी जोखिमों के प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है।
- **अपर्याप्त प्रतिनिधित्व और भागीदारी:** सीमित निर्णय लेने की शक्ति और कृषि नीति निर्माण में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व, उनकी आवश्यकताओं के लिए प्रभावी ढंग से वकालत करने की उनकी क्षमता में बाधा डालता है।

आगे की राह -

- **लैंगिक समानता वाले भूमि अधिकारों को सुनिश्चित करना:** नीतियों को महिलाओं के बीच संपत्ति के स्वामित्व को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए, उनकी आर्थिक स्थिति को सशक्त बनाने के लिए भूमि पंजीकरण और उत्तराधिकार अधिकारों को सुविधाजनक बनाना चाहिए।
- **वित्तीय पहुंच और समावेशन को बढ़ाना:** स्वयं सहायता समूहों, सहकारी समितियों और माइक्रोफाइनंस मॉडलों का लाभ उठाते हुए, विशेष रूप से महिलाओं के लिए ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच का विस्तार करना।

- **कृषि प्रौद्योगिकी तक पहुंच बढ़ाना:** जलवायु अनुकूलन सूचना केन्द्रों और मोबाइल परामर्श जैसे लक्षित हस्तक्षेपों के माध्यम से डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी तक पहुंच को बढ़ाना, ताकि महिला किसान सूचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।
- **कृषि मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करना:** महिलाओं के नेतृत्व वाली कृषि सहकारी समितियों, मूल्य श्रृंखलाओं और उद्यमों को समर्थन देना, बाजार संपर्क, उचित मूल्य और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को सुनिश्चित करना।
- **समावेशी नीति डिजाइन और कार्यान्वयन:** विस्तृत, लिंग-विभाजित आंकड़ों के आधार पर लिंग-संवेदनशील कृषि नीतियों को लागू करना, यह सुनिश्चित करना कि महिला किसानों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पहचाना जाए और प्रभावी ढंग से संबोधित किया जाए।
- **क्षमता निर्माण और सशक्तिकरण पहल:** महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना जैसी सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिला किसानों के कौशल और ज्ञान को लगातार बढ़ाना, कौशल उन्नयन और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना।
- **समुदाय-आधारित जलवायु अनुकूलन को प्रोत्साहित करें: ENACT (कमजोर समुदायों के जलवायु अनुकूलन को बढ़ाना) जैसे सफल मॉडलों का विस्तार करना, जो जलवायु-लचीले प्रथाओं, विविधीकरण और सामुदायिक बीज उत्पादन को अपनाने में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का लाभ उठाते हैं।**

स्रोत: [The Hindu: Empowering women in agriculture for food security](#)



आतंकवाद के विरुद्ध भारत के नेतृत्व वाले गुट की मांग

संदर्भ

पश्चिमी प्रभुत्व वाली आतंकवाद-रोधी संस्थाएं राज्य प्रायोजित आतंकवाद, विशेष रूप से पाकिस्तानी समूहों से, के निरंतर खतरे के खिलाफ अप्रभावी साबित हो रही हैं, इसलिए भारत ने एक नया "टी-20" (ट्वेंटी अगेंस्ट टेररिज्म) गठबंधन पेश किया है।

T20-ट्वेंटी अगेंस्ट टेररिज्म क्या है?

- यह भारत के नेतृत्व में प्रस्तावित एक अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन है, जिसमें वैश्विक दक्षिण के 20 देश शामिल हैं, जिसे विशेष रूप से आतंकवाद का व्यापक, सक्रिय और प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- उद्देश्य:
 - विकासशील देशों में आम तौर पर पाए जाने वाले, विषम और राजनीतिक रूप से जटिल आतंकवादी खतरों से निपटना।
 - आतंकवाद से लगातार प्रभावित देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले एक समर्पित वैश्विक मंच के रूप में कार्य करना।
- संभावित सदस्य: लगातार आतंकवादी खतरों का सामना करने वाले देश, जिनमें भारत, इंडोनेशिया, नाइजीरिया, केन्या, मिस्र, माली, फिजी, फिलीपींस, इथियोपिया, कजाकिस्तान, श्रीलंका और वियतनाम शामिल हैं।
- मूलभूत प्रकार्य:
 - संयुक्त कार्य बलों के माध्यम से खुफिया जानकारी साझा करना।
 - क्षमता निर्माण, कट्टरपंथ विरोधी कार्यक्रम और सहयोगात्मक प्रशिक्षण।
 - आतंकवाद के प्रायोजकों का नाम उजागर करने और उन्हें शर्मिंदा करने के लिए संयुक्त कूटनीतिक पहल।
 - उभरते खतरों से निपटना: साइबर आतंकवाद, ड्रोन युद्ध, क्रिप्टो-वित्तपोषित उग्रवाद।
 - विकास से जुड़े डी-रेडिकलाइजेशन के माध्यम से लचीलेपन को बढ़ावा देना।

T20 मौजूदा ग्रुपिंग से किस तरह अलग है

विशेषता	मौजूदा प्लेटफॉर्म (यूएन, एफएटीएफ, जीसीटीएफ)	T20 - ट्वेंटी अगेंस्ट टेररिज्म
सदस्यता संरचना	प्रमुख शक्तियों का प्रभुत्व, मुख्यतः पश्चिम-केंद्रित।	विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण, वे देश जो नियमित रूप से आतंकवाद का सामना कर रहे हैं।
परिचालन फोकस	प्रायः प्रतिक्रियात्मक, नौकरशाहीपूर्ण, राजनीतिक रूप से प्रभावित।	सक्रिय, चुस्त, परिचालन में तीव्र, क्षेत्रीय वास्तविकताओं के अनुरूप।
निर्णय लेना	भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से प्रभावित होकर कमजोर कार्रवाई की जा रही है।	साझा अनुभव, सामूहिक कार्रवाई, त्वरित आम सहमति द्वारा एकीकृत।
सुरक्षा प्रतिमान	पश्चिमी सुरक्षा ढांचे, प्रासंगिक हमले प्रतिक्रिया।	आतंकवाद को एक सतत सुरक्षा चुनौती के रूप में देखते हुए।
जनादेश स्पष्टता	व्यापक एवं अस्पष्ट अधिदेशों में प्रायः कार्यान्वयन योग्य स्पष्टता का अभाव होता है।	विशिष्ट, स्पष्ट, व्यावहारिक अधिदेश: खुफिया जानकारी साझा करना, लचीलापन निर्माण, वास्तविक समय समन्वय।

कूटनीतिक दृष्टिकोण	कूटनीतिक सावधानी और तटस्थता की ओर झुकाव।	आतंकवाद के राज्य प्रायोजकों की सार्वजनिक रूप से पहचान करने, उनकी निंदा करने तथा कूटनीतिक रूप से उन्हें अलग-थलग करने के लिए तैयार रहना।
प्रतिक्रिया की गति	प्रक्रियागत बाधाओं के कारण धीमी प्रतिक्रिया समय।	सुव्यवस्थित, सहयोगात्मक तंत्र के कारण त्वरित, समन्वित प्रतिक्रियाएं।
समावेशिता और प्रासंगिकता	इसमें प्रायः आतंकवाद से अत्यधिक प्रभावित देशों को शामिल नहीं किया जाता।	समावेशन को प्राथमिकता दी जाती है, तथा वैश्विक मंचों पर आमतौर पर हाशिए पर पड़े प्रभावित राष्ट्रों को आवाज और मंच प्रदान किया जाता है।

भारत के लिए सामरिक महत्व -

- **सैन्य बोझ के बिना नेतृत्व:** यह भारत को सैन्य उलझनों या कथित हस्तक्षेपवाद के बिना आतंकवाद का मुकाबला करने में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करता है।
- **भारत की वैश्विक दक्षिण साख को मजबूती प्रदान करना:** यह भारत की छवि को एक जिम्मेदार वैश्विक अभिकर्ता के रूप में सुदृढ़ करता है जो विकासशील देशों के सामूहिक हितों का समर्थन करता है।
- **कूटनीतिक प्रभाव में वृद्धि:** भारत को अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा बहसों में कूटनीतिक लाभ प्राप्त होता है, जिससे आतंकवाद पर आख्यानो पर प्रभाव पड़ता है।
- **परिचालन लाभ:** भारत सीमा पार आतंकवाद से निपटने के अपने व्यापक अनुभव और डिजिटल क्षमताओं का लाभ उठाकर T20 के सचिवालय, प्रशिक्षण केंद्रों और सूचना केंद्रों का प्रभावी ढंग से नेतृत्व और मेजबानी कर सकता है।

निष्कर्ष -

T20- ट्वेंटी अगेंस्ट टेररिज्म वैश्विक आतंकवाद-रोधी अभियान के लिए एक लक्षित और अभिनव दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो मौजूदा मंचों से काफी अलग है। वैश्विक दक्षिण के सामने आने वाली अनूठी और निरंतर चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करके, यह वैश्विक आतंकवाद-रोधी ढांचे में महत्वपूर्ण अंतराल को भरता है, जिससे भारत एक महत्वपूर्ण वैश्विक पहल के अग्रभाग में आ जाता है।

स्रोत: [Indian Express: A new T20 for win](#)